ISSN 2349-9354

समीक्षा

समीक्षा एवं शोध त्रैमासिक

अप्रैल-जून 2016

वर्ष-49 ● अंक-1

समीक्षा

समीक्षा एवं शोध त्रैमासिक

अप्रैल-जून, 2016

वर्ष 49, अंक 1

संस्थापक सम्पादक

गोपाल राय

सम्पादक

सत्यकाम

संयुक्त सम्पादक

अमिताभ राय

प्रबन्धन

सीमा

समीक्षा

ISSN : 2349-9354

अप्रैल-जून, 2016

वर्ष: 49, अंक : 1

प्रकाशन तिथि : 20 जून, 2016

मूल्य :

एक प्रति: *तीस रुपये*

संस्थाओं के लिए : *पचास रुपये*

वार्षिक सदस्यता : *दो सौ रुपये (डाक खर्च सहित)*

संस्थाओं के लिए : *तीन सौ रुपये (डाक खर्च सहित)*

आजीवन सदस्यता : *पांच हजार रुपये (डाक खर्च सहित)*

सम्पर्क:

समीक्षा

द्वारा *अमिताभ राय*

803, अमलतास, शिप्रा सृष्टि अहिंसा खंड-1,

इंदिरापुरम 201014, उ.प्र.

मोबाइल : 09582502101

ईमेल : sameekshatraimasik@gmail.com

निवेदन: कृपया सारे भुगतान केवल बैंक ड्राफ्ट अथवा ई-ट्रांसफर द्वारा निम्न चालू खाता संख्या: 2257002100011106, IFSC Code : PUNB0225700, पंजाब नेशनल बैंक, इग्नू, मैदानगढ़ी, दिल्ली-110068 में कीजिए। बैंक ड्राफ्ट 'समीक्षा' को नई दिल्ली में देय होगा। ड्राफ्ट उपरोक्त पते पर भेजें।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त

पत्रिका का अंक न मिलने पर इसकी सूचना उपरोक्त पते पर दें अथवा उपर्युक्त नं. पर सम्पर्क करें।

'समीक्षा' में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। सम्पादक, संयुक्त सम्पादक पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायाधिकरण, दिल्ली होगा

आवरण चित्र: सावित्री दुबे

अनुक्रम

संपादकीय		4
संस्मरण		
मेरो तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई	व्रजेश	6
पुरानो सेई दिनेर कथा	शत्रुघ्न कुमार	8
नवांकुर		
सूक्ष्मतम नाटकीय अंतर्दृष्टि की अप्रतिम अभिव्यक्ति: 'हैमलेट का हिन्दी रूपांतर'	वैशाली वशिष्ठ	10
साक्षात्कार		
मैं स्थापित होने के लिए आज भी संघर्षरत हूँ	कंचन कुमारी	13
कविता		
बस एक आँगन है चौकोर	अजितकुमार	18
दुबारा इसी दुनिया में	आशुतोष कुमार	20
समय लेता आकार	मृत्युंजय उपाध्याय	23
अँधेरे में रोशनी की तलाश करती कविताएँ	वेदप्रकाश अमिताभ	25
शाश्वत संघर्ष की कविताएँ	जगन्नाथ प्रसाद दुबे	27
बेबाक कविताओं की दुनिया	अरमान आनंद	30
प्रकृति के आँगन में थिरकता मन	संदीप जायसवाल	34
आत्मकथा		
आत्म से सर्वात्म की ओर	पूनम सिन्हा	37
डायरी		
बच्चों की दुनिया में बड़ों का स्वागत	निशान्त	41
कला		
मधुबनी चित्रकला	विद्या सिन्हा	44
सुर साधकों से आत्मीय संवाद	शिवनारायण	46
उपन्यास		
'हिन्दू' समाज और संस्कृति का महाख्यान	अनिल राय	48

आलोचना/इतिहास/शोध

विश्व मिथक कथासरित्सागर: फूटा कुम्भ, जल जलहिं समाना	अनामिका	53

आलोचना

सामाजिक विमर्श के आईने में 'चाक'	कृष्ण चन्द्र लाल	57
'मीर' पर दो नायाब ग्रंथ	राजेन्द्र टोकी	60
बाबा खुद एक मैग्नीफाइन्ग ग्लास हैं	हर्षबाला शर्मा	63
कहानी आलोचना के नए आधारों की पहचान	शशिभूषण मिश्र	66
कथा विवेक का सजग अन्वेषण	प्रणव कुमार ठाकुर	69

पुस्तक परिचय

प्रेमाभक्ति: भक्तिकाव्य का उत्तरार्ध	नंद किशोर	12
भारतीय चिन्तन परम्पराएँ: नए आयाम, नई दिशाएँ	जसविन्दर कौर बिन्द्रा	26
गंगा तट से भूमध्यसागर तक	जसविन्दर कौर बिन्द्रा	72

संपादकीय

श्रद्धांजलि

हम दुख के साथ सूचित करना चाहते हैं कि विगत 6 जुलाई 2016 को डॉ. हरदयाल हमारे बीच नहीं रहे। हिन्दी साहित्य के लिए यह अपूरनीय क्षति है। डॉ. हरदयाल हिन्दी के सुपरिचित लेखक, कवि, आलोचक और समीक्षक थे। उनका जन्म 24 मार्च 1939 को ग्राम-जगत, जिला-बदायूँ (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा बलवंत राजपूत कॉलेज, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा में हुई थी। उन्होंने एम.ए. हिन्दी, पीएच-डी. और डी.लिट् की उपाधि प्राप्त की। 1961 से 1969 तक उत्तर प्रदेश के 3 स्नातक-स्नातकोत्तर महाविद्यातयों में बी.ए., एम.ए. की कक्षाओं में पढ़ाने के बाद 16 अगस्त 1969 से 23 मार्च 2004 तक श्यामलाल कॉलेज, शाहदरा, दिल्ली में पहले लेक्चरर और तत्पश्चात रीडर के रूप में अध्यापन के साथ दिल्ली विश्वविद्यातय में एम.ए. कक्षाओं में भी अध्यापन किया। 1960 के आसपास से हिन्दी की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कविता, कहानी, निबंध, आलोचनात्मक लेख, संस्मरण आदि विधाओं की रचनाओं का नियमित प्रकाशन होता रहा। जनवरी-मार्च 2001 से जनवरी-मार्च 2009 तक आप गोपाल राय के साथ 'समीक्षा' के सम्पादक रहे। 'समीक्षा' पत्रिका में उनकी पहली 'समीक्षा' अक्टूबर 1971 के अंक में प्रकाशित हुई।

डॉ. हरदयाल अपने साफ-सुथरे और सादगी भरे व्यक्तित्व और लेखन के लिए हमेशा याद किए जाएँगे। समीक्षा परिवार की ओर से हम डॉ. हरदयाल को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे. हम यह भी प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उनके शोक संतप्त परिवार को इस कठिन समय में संबल प्रदान करे।

गोपाल राय स्मृति समारोह

13 जुलाई 2016 को साहित्य अकादमी (दिल्ली) के संगोष्ठी कक्ष में 'समीक्षा' की ओर से गोपाल राय स्मृति समारोह का आयोजन किया गया जिसमें 'समीक्षा' के संस्थापक संपादक प्रो. गोपाल राय के व्यक्तित्व और उनके अवदानों पर विस्तार से चर्चा हुई। सभी वक्ताओं ने गोपाल राय के दृढ़ निश्चयी व्यक्तित्व और तथ्यों के प्रति उनके विश्वास और आस्था को अलग-अलग भावों और शब्दों में अभिव्यक्त किया गया। मैत्रेयी पुष्पा, बृजेंद्र त्रिपाठी, वीरेन्द्र सक्सेना और सत्यकेतु सांकृत ने गोपाल राय के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अपनी बातें रखीं। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुचकुंद दुबे ने गोपाल राय से जुड़े संस्मरणों को साझा किया और बताया कि उनके मित्र गोपाल राय अपने विद्यार्थी जीवन से ही किस प्रकार मौलिकता और शोधपरक लेखन को अतिशय महत्त्व देते थे; इसकी उन्होंने विस्तार से चर्चा की। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष विश्वनाथ त्रिपाठी ने गोपाल राय के व्यक्तित्व और विजन की चर्चा करते हुए बताया कि वे एक खोजी व्यक्ति थे, पुरातत्ववेत्ता थे और उन्होंने बहुत सारी ऐसी सामग्रियाँ कच्चे माल के रूप में हिन्दी साहित्य को उपलब्ध कराई हैं जिनसे हिन्दी साहित्य इतिहास को एक नया रूख प्रदान किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि गोपाल राय कभी भी किसी वाद के घेरे में नहीं बंधे बल्कि उन्होंने वाद के घेरे को तोड़ा और स्वतंत्र रूप से अपनी बात कही। उन्हें जो भी बात पसंद नहीं आती थी उसे वे वेटूक कहते थे। वे टुकुर-टुकुर साहित्य को देखने वाले व्यक्ति नहीं थे बल्कि साहित्य की हर गतिविधि पर उनकी पैनी नजर रहती थी। 'समीक्षा' के संपादन के द्वारा उन्होंने हिन्दी साहित्य में एक नई दृष्टि पैदा करने की कोशिश की। गोपाल राय के लौह व्यक्तित्व को उन्होंने नमन किया। इस समारोह में हिन्दी के जाने-माने विद्वान, शिक्षक, शोधार्थी और विद्यार्थी भी उपस्थित थे। 'समीक्षा' की ओर से यह निर्णय लिया गया कि गोपाल राय की जन्मतिथि 13 जुलाई को हर वर्ष एक व्याख्यान आयोजित किया जाएगा जिसमें साहित्य और समाज के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा और बहस होगी।

कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

पिछले दिनों कई महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। जिसमें से तीन पुस्तकों की चर्चा मैं यहाँ करना चाहूँगा। इनकी विस्तृत समीक्षा 'समीक्षा' के अगले अंक में आएगी पर इसकी चर्चा यहाँ इसीलिए करना चाहता हूँ कि ये नए ढंग से लिखी गई पुस्तकें हैं और ज्यादा से ज्यादा लोग इसे पढ़ें और लाभान्वित हों यही मेरी मंशा है।

वरिष्ठ आलोचक प्रो. निर्मला जैन की आत्मकथा 'जमाने में हम' इस दौरान छपकर आई है। यह पुस्तक इतनी दिलचस्प और रोचक अंदाज में लिखी गई है कि इसे एक साँस में पढ़ा जा सकता है। निर्मला जैन का